PG II
(3) Chapter

नृजातिशास्त्री ने किसी भी आदिम समाज [illegible] विश्वासों तथा व्यवहारों के नहीं किया है। Religious beliefs and Practices

(E)

जनजातीय भारत धार्मिक विश्वासों तथा व्यवहारों का रंगीन परिदृश्य प्रस्तुत करता है, जो उनकी सांस्कृतिक-पारिस्थितिक दशाओं के साथ उनके समायोजन की अभिव्यक्ति है। चालीस के दशक के अन्तिम वर्षों तक भारत में जनजातीय धर्मों को विभिन्न जनगणना रिपोर्टों तथा साहित्यों में 'जीववाद' की संज्ञा दी गयी है। जीववाद का अभिप्राय धर्म के अपरिष्कृत स्वरूप से भा जिसमें जादू अत्यन्त प्रधान तत्व है। यह मनुष्य की कल्पना एक ऐसे जीवन से गुजरते हुए करता है जो भुतही संगति की शक्तियों तथा तत्त्वों से घिरा हुआ है तथा जिसका स्वरूप अधिकांशतः अवैयक्तिक प्रकार का है। इनमें से कुछ को जीवन के विविध भागों पर अधिशासी शक्तियों के रूप में माना जाता है। प्रत्येक शक्ति के प्रभाव का अपना क्षेत्र होता है। इस प्रकार एक आत्मा विभिन्न प्रकार की बीमारियों पर अधिष्ठात्री शक्ति वाली होती है, चट्टानों, नदियों तथा झरनों में रहने वाली आत्माएँ इत्यादि। इनके प्रभाव से सम्बद्ध विपत्तियों से बचाव के लिए इनकी बड़ी परिश्रमपूर्वक आराधना की जाती है।

Scanned with CamScan

आत्माएँ प्रत्येक स्थान पर निवास करती हैं तथा मनुष्यों को रोगों से मुक्ति एवं दीर्घजीवन हेतु उनके साथ शान्तिपूर्वक रहना पड़ता है। यदि कोई व्यक्ति रोगग्रस्त हो जाता है तो सामान्य विश्वास है कि किसी सम्बन्ध का उल्लंघन हुआ है। जादू तथा इन्द्रजाल की कला में कुशल पुरुष तथा महिला निश्चय करते हैं कि दु:खी व्यक्ति के लिए क्या किया जाना चाहिए। अधिक परिष्कृत समाजों में कुछ स्थान यथासम्भव एक दीवार से घिरा हुआ तथा छत से ढका हुआ विशेष रूप से पवित्र अंकित कर दिया जाता है किन्तु जीववादी जनजातियों में सभी स्थान पवित्र माने जाते हैं क्योंकि उन्हें आत्मा का स्थान माना जाता है।

कोरवा लोगों में एक आत्मा फसलों, वर्षा, पशुओं की अधिष्ठात्री होती है। इसके अतिरिक्त अनेक आत्माएँ होती हैं जो कोरवा लोगों के उनके पड़ोसियों, पुरोहितों, प्रमुखों आदि के प्रति अभिवृत्ति को निर्धारित करती हैं। जीववादी, हितकारी तथा अहितकारी दोनों प्रकार की आत्माओं में विश्वास करता है कि जिन्हें मनुष्य के भाग्य को प्रभावित करने वाला माना जाता है। हितकारी आत्माओं की ओर कोई ध्यान नहीं देता क्योंकि उनसे कोई भयभीत नहीं होता है। इस प्रकार उदाहरणार्थ, महान् सूर्य देवता, मुण्डा जनजाति के सिंगवोंगा की उपासना बहुत ही कम की जाती है क्योंकि वह सौम्य है तथा किसी को हानि नहीं पहुँचाता है। यह आदिम धर्मों का प्रारूप प्रमाणक चिह्न है। उनका अधिक सरोकार सारी शक्तियों, भयों तथा मन्शाओं से होता है किन्तु उन लोगों को दोष देना उचित नहीं होगा, जो निरन्तर प्रेतात्माओं एवं आत्माओं के भय से जीवन व्यतीत करते हैं। सभी लोगों की अपनी आशाएँ तथा भय होते हैं, तथा जनजातीय धर्म के इस एक तत्त्व को ही लक्षित करना तथा यह कहना कि उनका जन्म भय से होता है, उनके प्रति अन्याय करना है।

छोटा नागपुर की मुण्डा, ओराँव तथा 'हो' जैसी जनजातियाँ एक अतिप्राकृतिक (अलौकिक) शक्ति में विश्वास करती हैं, जिसे उनकी बोली में 'बोंगा' कहा जाता है। 'हो' लोगों में बोंगा को अनिश्चितता तथा अवैयक्तिकता की शक्तियों के रूप में अस्पष्ट रूप से समझा जाता है, तथा उनका कोई वस्तुनिष्ठ अभास अथवा अस्तित्व नहीं होता है। मुण्डा जीवन पर बोंगा की व्यापक श्रेष्ठता केवल मानवत्वारोपण (anthropomorphism) की सीमा प्रदर्शित करती है। अवैयक्तिक बोंगा स्वप्न को माध्यम बनाकर पूर्व कथन के लिए प्रयोग करता है। दिवास्वप्नों का प्रयोग बुरी वस्तुओं की पूर्व चेतावनी के रूप में किया जाता है। बोंगा एक अस्पष्ट अलौकिक शक्ति का प्रतीत होता है तथा सम्पूर्ण ऊर्जा का कारण होता है। अब बाइसिकिल भी एक बोंगा बन गयी। शक्तिशाली वाष्प इंजन एक बोंगा

Scanned with CamScanner